क्या स्कूल पुस्तकालय पढ़ने–लिखने और सीखने–सिखाने का अहम हिस्सा है ?

आराधना गुप्ता

पुस्तकालय के बिना किसी भी अच्छे स्कूल की कल्पना नहीं की जा सकती है, क्योंकि ये विद्यार्थियों के लिए पढ़ना-लिखना और सीखने-सिखाने का ज़रूरी हिस्सा है। पुस्तकालय विद्यार्थियों में स्वाध्याय की आदतों का विकास करता है, वहाँ उपलब्ध किताबें बच्चों को ख़ुशी और मनोरंजन का अवसर देती हैं और उनमें चीज़ों के बारे में सोचने-विचारने व सृजनशीलता का विकास होता है। एक सजग और चिन्तनशील शिक्षक द्वारा बच्चों की भाषा और अन्य विषयों के अध्यापन के लिए पुस्तकालय में आयोजित की जाने वाली रचनाशील गतिविधियाँ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस लेख में लेखिका पुस्तकालय के उद्देश्य, बच्चों के जीवन में उसका महत्त्व और पुस्तकों की मदद से भाषा शिक्षण के प्रमुख कौशलों के विकास के लिए सुविचारित गतिविधियाँ सुझाती हैं। सं.

क्या स्कूल पुस्तकालय पढ़ने-लिखने और सीखने-सिखाने का अहम हिस्सा है? मुझे यह लेख लिखने का विचार इसलिए आया क्योंकि मैंने 2014-15, 2018-19 और 2019-20 में सरकारी प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों और बच्चों के साथ, ‘पुस्तकालय कैसे सीखने-सिखाने में मदद करता है’, विषय को लेकर काम किया था। मैं आपसे प्राथमिक स्कूल के पुस्तकालय का अनुभव साझा करूँगी, क्योंकि यह अभी हाल ही में शिक्षकों और बच्चों के साथ किया गया कार्य है।

मैंने शासकीय पूर्व बुनियादी प्राथमिक शाला, खम्हारडीह, रायपुर, छत्तीसगढ़ में सितम्बर 2019 से मार्च, 2020 तक क़रीब 6 महीने काम किया। स्कूल में 4 शिक्षिकाएँ और एक हेड टीचर हैं। कुल 174 छात्र-छात्राएँ हैं। मैंने पहले भी सरकारी स्कूल के पुस्तकालय पर एक अनुसन्धान किया था जिसका शीर्षक था– ‘पुस्तकालय के प्रति शिक्षकों की धारणा।’ इस छोटे-से अनुसन्धान से यह बात सामने आई थी कि शिक्षक आमतौर पर पुस्तकालय को सीखने-सिखाने का हिस्सा मानते ही नहीं हैं। उनका मानना है कि पुस्तकालय एक अलग से कोई जगह है। इसलिए मैंने स्कूल के पुस्तकालय को स्थापित करने, इसे बेहतर बनाने और उसका उपयोग कैसे सीखने-सिखाने में हो, इस उद्देश्य को लेकर कार्य किया। मैंने प्राथमिक शाला, खम्हारडीह के भ्रमण का कार्यक्रम बनाया। पुस्तकालय की हर एक गतिविधि कैसे पढ़ने-लिखने और अन्य कौशल में सहयोग करती है, इस समझ के साथ सभी शिक्षकों एवं प्रधान अध्यापक से बातचीत करने के उपरान्त मैंने इस स्कूल को चुना। यहाँ हम पुस्तकालय की स्थापना, उसके उपयोग और उसके बारे में शिक्षकों की धारणा व बच्चों में आए बदलावों को देखेंगे।

पुस्तकालय के उद्देश्य

- विद्यार्थियों में पढ़ने-लिखने की आदत को पोषित करना।
- विद्यार्थियों की रचनात्मकता को बाहर लाने की कोशिश करना।

- विद्यार्थियों में सीखने की रुचि पैदा करना।
- ख़ुशी और मनोरंजन के लिए पढ़ने और ज्ञान एवं कल्पना को मज़बूत बनाने के विचार की एक जगह बनाना / उपलब्ध कराना ।
- विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति रुचि जागृत करना।
- स्वाध्याय के लिए प्रेरित करना।
- बच्चों में साहित्य के प्रति रुचि पैदा करना।
- बच्चों में सोचने, विचारने और कल्पना का विकास करना।

पुस्तकालय की पुनःस्थापना

सबसे पहले स्कूल के पुस्तकालय की साफ़-सफ़ाई के बाद पुस्तकालय की दीवार में कविताओं के कुछ पोस्टर लगाकर सुसज्जित किया गया। वहाँ उपलब्ध पुस्तकों को सभी ने, यानी शिक्षक, बच्चे और मैंने, मिलकर विषयानुसार व्यवस्थित किया और उनका वर्गीकरण किया। स्कूल में कविता, कहानी, विज्ञान, जीवनी और कुछ मिले-जुले विषयों की किताबें थीं, अतः इतने ही विषयों को रखा गया। चूँकि यह बच्चे अभी छोटे हैं तो मैंने किताबों के वर्गीकरण के लिए यहाँ पुस्तकालय विज्ञान के DDC (Dewey Decimal Classification) का उपयोग नहीं करके किताबों में विभिन्न रंगों की पट्टी लगवाकर उन्हें विषयानुसार लगाया। अगर अन्य विषय की किताबें आती हैं उन्हें पुनः अन्य रंग से वर्गीकृत किया जाएगा। हमने एक चार्ट पेपर लेकर उसमें प्रत्येक रंग की पट्टी लगाई और उसके आगे विषय का नाम लिख दिया। जैसे–

चित्र : प्रशांत सोनी

गुलाबी रंग	–	कहानी
हरा रंग	–	विज्ञान
पीला रंग	–	कविता
नारंगी	–	जीवनी
सफ़ेद	–	अन्य

इसका मतलब है, अगर बच्चे को कहानी पढ़ना है तो वह गुलाबी रंग की पट्टी लगी हुई किताब उठाकर पढ़ेगा और अगर उसे कविता पढ़नी हो तो वह पीले रंग की पट्टी लगी हुई किताब उठाकर पढ़ेगा। अन्त में हमने सभी कक्षाओं के बच्चों को बरामदे में बुलाकर निम्नलिखित बातें कीं–

- क्या आप सभी पुस्तकालय को जानते हैं?
- पुस्तकालय का महत्त्व क्या है?
- हम वहाँ क्या-क्या करते हैं?
- आप लोगों को किताबें पढ़ना अच्छा लगता है कि नहीं?
- पुस्तकालय की किताबें क्यों पढ़नी चाहिए?
- आपने कौन-कौन सी कहानी, कविता और अन्य विषयों की किताबें पढ़ी हैं?
- तरह-तरह की किताबें क्यों पढ़नी चाहिए? आदि विषयों पर चर्चा की।

गतिविधि : पढ़ना-लिखना और अभिव्यक्त करना, इन सभी को जोड़कर हम बच्चों को

विषयों को सिखाने में कैसे मदद कर सकते हैं। इन सबसे सम्बन्धित हमने अनेक गतिविधियाँ कराईं, जो इस प्रकार हैं—

शिक्षकों व बच्चों के साथ अनेक प्रकार की गतिविधियाँ कराने का मेरा उद्देश्य यह रहता है कि बच्चे और शिक्षक पुस्तकालय से जुड़ें, और दोनों समझें कि पुस्तकालय भी स्कूल का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण भाग है। पुस्तकालय में ढेर सारी पुस्तकें रहती हैं। विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ जो पुस्तक में दी गई होती हैं, बच्चे उन्हें करें। उनमें किताब पढ़ने की आदत यानी रीडिंग हैबिट पड़े, और यह तभी सम्भव होता है जब बच्चे यह जान पाते हैं कि ऐसी भी पुस्तकें होती हैं जिनमें से हम विभिन्न प्रकार की चीज़ें बना सकते हैं और इससे बच्चों की रचनात्मकता का विकास होता है। बच्चों को आश्चर्य भी होता है कि पुस्तकों से हम क्या-क्या ऐसी चीज़ें बना सकते हैं और ऐसी कई प्रकार की पुस्तकें पुस्तकालय में रहती हैं जो हमारे लिए उपयोगी हैं। सबकुछ विषय से जुड़ता है, पुस्तकालय कोई अलग जगह नहीं है। सबसे ज़रूरी बात यह है कि प्रत्येक गतिविधि पुस्तक पर ही आधारित होती है।

गतिविधि की योजना : हमें यह जानना ज़रूरी है कि गतिविधि कब करनी है, किस कक्षा में करनी है और कौन-से शिक्षक के साथ करनी है। जिस भी शिक्षक के साथ कोई गतिविधि करनी होती थी, तो पहले मैं उनसे उस गतिविधि का नाम, उसका उद्देश्य और कैसे करना है, आदि बातें पहले ही कर लेती थी और योजना बना लेती थी। मैंने कभी भी शिक्षकों की कक्षा में व्यवधान नहीं डाला। हफ़्ते में एक या कभी-कभी दो बार मेरा स्कूल का भ्रमण होता था। हमेशा लंच के बाद दो कालखण्डों को एक करके और अन्त के आधे घण्टे खेलकूद और पुस्तकालय का लेकर डेढ़ से दो घण्टे में यह गतिविधि होती थी। बच्चों द्वारा किए गए कार्य को कक्षा की दीवारों पर लगाया जाता था। हमने यह गतिविधियाँ किताबों के हिसाब से कीं और कुछ गतिविधियाँ शिक्षकों ने स्वयं डिज़ाइन कीं।

हमने पुस्तकों से सम्बन्धित निम्नलिखित गतिविधियाँ कराई—

कक्षा 1— टीएलएम एवं किताब को देखना यानी अलटना-पलटना, चित्र की पहचान, मात्रा वाले और बिना मात्रा वाले शब्दों को अलग करना, चित्र देखकर कहानी बताना।

कक्षा 2— शब्द और वाक्य बनाना, शब्दों को पढ़ना, पुस्तक पलटना और चित्र बनाना, मात्रा वाले और बिना मात्रा वाले शब्दों को अलग करना, चित्र देखकर कहानी बताना।

कक्षा 3— किताब का हिसाब, कहो कहानी, अँग्रेज़ी की वर्णमाला (alphabet) और शब्दों (words) की पहचान, कविता को क्रम से जमाओ, मेरी प्रिय पुस्तक, कहानी सुनाओ।

कक्षा 4— शीर्षक बने कहानी, जिन खोजा तिन पाइयाँ, कविता को क्रम से जमाओ, लिखो कहानी अपनी मनमानी, आओ एक्टर बनें।

कक्षा 5– पुस्तक की अन्त्याक्षरी, कविता को क्रम से जमाओ, मेरी प्रिय पुस्तक, आओ एक्टर बनें।

आइए, हम 'शीर्षक बने कहानी' गतिविधि के बारे में जानते हैं कि उसे किस प्रकार किया गया :

यह गतिविधि किताबों के नामों से कहानी बनाने की है। चूँकि कक्षा 4 के 41 में से 26 बच्चे उपस्थित थे। हमने इसे बच्चों को 5 समूह में बैठाकर कराया था। कहानी किताबों में होती है, अगर किताबों के शीर्षक से ही कहानी बन जाए तो कैसा रहे। इस गतिविधि का उद्देश्य बच्चों को पुस्तकालय में उपलब्ध किताबों के नामों से परिचित करवाना और उनमें कल्पना शक्ति का विकास करना है।

पहले सभी बच्चे लाइब्रेरी से अपनी पसन्द की एक-एक किताब लेकर आए। उसके बाद 5 समूह बनवाए गए। शिक्षक द्वारा सभी 5 समूहों के नम्बर कॉलम बनाकर लिखे गए। प्रत्येक समूह से हर एक बच्चा लाइब्रेरी से लाई अपनी किताब का नाम बता रहा था, जिसे श्यामपट्ट पर लिखा जा रहा था। जब सभी की किताबों का नाम लिखना हो गया, तब बच्चों ने पहले *सर्कस* किताब शीर्षक का उपयोग करते हुए एक वाक्य बनाया। अगले समूह के बच्चे ने *मोरपंख* किताब का शीर्षक लेकर वाक्य बनाया। यहाँ नया वाक्य पिछले वाक्य से जुड़ रहा था और हर एक किताब का शीर्षक उस बात को आगे बढ़ा रहा था। बस इसी तरह किताबों के शीर्षक का प्रयोग कर मज़ेदार कहानी बन गई। अन्त में जो कहानी बनी, उसका नाम दिया गया 'त्रिवेणी नगर का सर्कस'। सभी समूहों से एक बच्चा सामने आकर कहानी को बता रहा था, अन्त में सभी बच्चे लाइब्रेरी से लाई किताब पढ़ने लगे। बच्चों को बहुत मज़ा आ रहा था। बच्चों ने मिलकर जब किताबों के शीर्षक से एक नई कहानी को बनाया तो वे बहुत ख़ुश हुए। बच्चों का कहना था कि आप हर हफ़्ते लाइब्रेरी की गतिविधि को कराएँ। शिक्षकों ने कहा कि बच्चे इससे पढ़ना सीख सकते हैं और उनमें पढ़ने के प्रति रुचि भी जागृत होगी।

बच्चों द्वारा पढ़ी गई किताबों के नाम

जब हम पुस्तकालय की बात करते हैं तो स्वाभाविक है कि किताबों का नाम आना चाहिए। जिन किताबों को बच्चों ने इन गतिविधियों को कराने के दौरान एवं पुस्तकालय से स्वयं लेकर भी पढ़ा, वे छत्तीसगढ़ की क्रमिक अधिगम सामग्री पुस्तक, रूम टू रीड और एकलव्य की पुस्तकें थीं। इनमें कहानी, कविता, नाटक, स्वच्छता आदि विधाओं से सम्बन्धित किताबें थीं, जैसे– *मिट्ठू, सर्कस, लाल पतंग, बिल्ली गई दिल्ली, डमरू, जरा मुस्कुराइए, स्वच्छता अभियान, मेरा एक सवाल, पतंग, We Indian, चतुर चूहा और बुद्धू बंदर, अवी और चींटियाँ, चाँद का घर, खिचड़ी, बिल्ली के बच्चे, चूहे को मिली पेंसिल, नाव चली* और कुछ पत्रिकाएँ जैसे– *प्लूटो, चकमक* आदि।

इन गतिविधियों को कभी समूह में तो कभी अकेले-अकेले और कभी पूरी कक्षा को लेकर एक

साथ कराया जाता था। हर गतिविधि के दौरान हम यह सुनिश्चित करते थे कि प्रत्येक बच्चे की भागीदारी हो, सभी को किताब मिले, सभी के नाम ब्लैकबोर्ड पर हों, और सभी को बोलने का मौक़ा मिले। जो भी गतिविधि होती थी उसका नाम शिक्षकों द्वारा ब्लैकबोर्ड पर लिखा जाता था और उसके नीचे सभी बच्चों के नाम होते थे कि उन्होंने कौन-कौन सी किताब पढ़ी। पहले क्रम में ऐसी गतिविधि कराई गई कि बच्चे लाइब्रेरी जाएँ, पुस्तकों से परिचित हों, उन्हें अलटें-पलटें, चित्र देखें एवं पढ़ने की कोशिश करें। द्वितीय क्रम में ऐसी कोशिश की गई कि बच्चे किताब को पढ़ें और चर्चा करें और तृतीय क्रम में पुस्तक पढ़ने के बाद बच्चे अपने मन से लिखें और उसे अपने मन से अभिव्यक्त करें। इस तरह हमने देखा कि बच्चों की किताबों को पढ़ने की रुचि दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी। वे इन्तज़ार करते थे कि कब पुस्तकालय की गतिविधि होगी और कब वे किताबें पढ़ेंगे। बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ने लगा और उन्होंने सच में जाना कि आख़िर पुस्तकालय होता क्या है।

चित्र : प्रशांत सोनी

गतिविधियों के दौरान के अनुभव : इन सभी गतिविधियों के दौरान मैंने देखा कि–

कक्षा 1 के बच्चे अक्षर और शब्द कार्ड के टीएलएम को अलट-पलट कर पढ़ने की कोशिश कर रहे थे और उसी में रमे हुए थे। रूम टू रीड की किताबें जैसे– *दादाजी का छाता, रंग, जंगल में खुशबू* आदि के चित्रों को देखकर बच्चे उनके बारे में बता पा रहे थे। इन किताबों को देखकर वे बहुत आनन्द ले रहे थे। इस कक्षा में एक छात्रा नन्दिनी कुमारी को छोड़कर कोई भी बच्चा पढ़ नहीं पाता था, लेकिन जब उन बच्चों को चित्रों वाली बड़ी-बड़ी किताबें मिलती थीं तो वे बहुत ख़ुश होते और उन्हें अपने मन से समझने की कोशिश करते थे।

कक्षा 2 के बच्चे भी एकलव्य और रूम टू रीड की किताबों को पढ़ने की कोशिश करते थे। उन्होंने *कुल्हड़ का बाजा, लड्डू, खिचड़ी, बिल्ली के बच्चे, चूहे को मिली पेंसिल, मेंढक का नाश्ता, सो जा उल्लू* आदि किताबों को बहुत पसन्द किया। एक महीने पहले तक बच्चे केवल 'आ' की मात्रा वाले शब्द पढ़ पाते थे, लेकिन आज दो महीने बाद कुछ बच्चे बहुत अच्छे-से पुस्तकालय की किताबों को पढ़ पा रहे थे। यह देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा था। एक बहुत बड़ा बदलाव मुझे देखने को मिला। दरअसल 6 फरवरी 2020 की ही बात है। इस कक्षा की कक्षा शिक्षिका ने मुझसे कहा था कि अभी बच्चे 'आ' की मात्रा वाले शब्द पहचानते हैं, इसलिए हम बच्चों से मात्रा वाले और बिना मात्रा वाले शब्दों को पहचानकर अलग-अलग लिखने को कहेंगे। तब हमने यह गतिविधि टीएलएम के माध्यम से की एवं कुछ शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखा। तब उस दिन उपस्थित 24 बच्चों में से 10 बच्चे बिना मात्रा वाले शब्द पढ़ और लिख पा रहे थे,

7 बच्चे बिना मात्रा वाले और मात्रा वाले शब्दों को पहचानकर अलग-अलग लिख भी ले रहे थे और पढ़ भी पा रहे थे, लेकिन बाक़ी 7 बच्चे न तो अक्षर ही पहचान पा रहे थे और न ही पढ़ पा रहे थे। लिखने में उन्होंने कुछ शब्द इस प्रकार देखकर उतार दिए कि जैसे वे शब्द उनके लिए चित्र हों और इनमें से भी 4 बच्चों ने तो कुछ भी उतारकर पेपर में नहीं लिखा। केवल शान्ति, रंजीत, किशन एवं कामिया तेज़ी से पढ़ पा रहे थे। लेकिन 20 दिनों बाद हमने देखा कि कुछ बच्चे पढ़ रहे थे और कुछ पढ़ने की कोशिश कर रहे थे। मैंने बाद में कक्षा शिक्षिका से इस विषय में बात की और उन्हें अवगत कराया कि बच्चे

अब पढ़ पा रहे हैं। पुष्पा मैडम और मैंने भी उस दौरान देखा कि मानसी नाम की छात्रा चुपचाप बैठी रहती थी और ख़ुद को अकेला महसूस करती थी। उसे लगता था कि शिक्षक उसपर ध्यान नहीं देते हैं और इसलिए वह हमेशा स्वयं को अलग व कमज़ोर मानती थी। लेकिन जब पुष्पा मैडम और मैंने उस बच्ची को पढ़ने के लिए प्रेरित किया और विशेष ध्यान दिया, तो वह बोलने भी लगी और पढ़ने भी लगी।

कक्षा 3 में जब 'मेरी प्रिय पुस्तक' की गतिविधि में हमने बच्चों से कहा था कि अब तक आप लोगों ने पुस्तकालय से जितनी किताबें पढ़ी हैं, उनमें से आप अपने मन से उन किताबों में से किसी एक किताब के बारे में लिखें कि वह किताब आपको क्यों अच्छी लगी। इस दौरान हमने देखा कि कुछ ही बच्चे लिख पा रहे थे और अधिकांश बच्चे नहीं लिख पा रहे थे। लेकिन वे *चंदा की कंघी, जंगल में मंगल* आदि जैसी किताबों को पढ़ने में काफ़ी रुचि दिखा रहे थे।

कक्षा 4 में मुहावरों की गतिविधि 'जिन खोजा, तिन पाइयाँ' के लिए उनकी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के पाठ 11 *'जीत खेल भावना की'* से करा रहे थे। इसमें बच्चों को पाठ पढ़कर उसमें से मुहावरे खोजना था और उनके अर्थ बताने थे। लेकिन उन्हें अब तक मुहावरों के बारे में स्पष्टता नहीं थी। हालाँकि इस गतिविधि से बच्चे समझ रहे थे और उनका वाक्यों में प्रयोग कर बता रहे थे। वे ऐसे उदाहरण ले रहे थे जिनको वे जीवन में सुनते थे और वैसे ही मुहावरों का प्रयोग कर रहे थे। बच्चे बहुत आनन्द ले रहे थे और खेल-खेल में बताते भी जा रहे थे। इसमें उन्हें बोरियत भी महसूस नहीं हो रही थी। उदाहरण के लिए, एक मुहावरा आया— 'कहा-सुनी हो जाना', तो एक बच्ची ने इसका वाक्य में इस तरह प्रयोग किया— 'मेरे मम्मी और पापा के बीच कहा-सुनी हो गई'। जबकि शिक्षिका ने हमें बताया कि यह पाठ पहले पढ़ाया जा चुका था, उस समय बच्चे यह नहीं बता पा रहे थे, पर अभी वे इस गतिविधि के दौरान बता पा रहे हैं। इसी कक्षा में एक और गतिविधि 'लिखो कहानी अपनी मनमानी' कराई गई, जिसमें कहानी के एक पैराग्राफ़ को शिक्षक ने ब्लैकबोर्ड पर लिख दिया था और बच्चों को अपने मन से उस

कहानी को पूरा करना था। मतलब उसे उन्हें अपनी कॉपी में लिखना था। कुछ बच्चों को छोड़कर सभी बच्चों ने अपने मन से कहानी को आगे बढ़ाकर लिखा। उनकी कहानी को पढ़कर लगा कि बच्चे कितना आगे तक सोचते हैं!

कक्षा 4 एवं 5 में हमने 'आओ एक्टर बनें' गतिविधि कराई। इसमें बच्चों को अब तक पढ़ी गई किताबों में से पुस्तकालय की किसी एक किताब पर समूह में नाटक प्रस्तुत करना था। इसका उद्देश्य था कि बच्चों की अभिव्यक्ति बाहर आए और उनमें निखार हो। शिक्षकों और मैंने पहले से ही निर्णय ले लिया था कि अमुक दिन हम वह गतिविधि कराएँगे। सभी बच्चों को पहले से ही कहा गया था कि आप लाइब्रेरी की अपनी मनपसन्द किताब से अलग-अलग समूह में नाटक तैयार कर रखेंगे जिसमें शिक्षक आपकी मदद करेंगे। शिक्षकों की अन्य कार्य में व्यस्तता के कारण बच्चों ने स्वयं ही नाटक तैयार किया। इसमें कक्षा 5 के एक समूह के बच्चों द्वारा 'पतंग' एवं 'ज़रा मुस्कुराइए' नाटक प्रस्तुत किया गया। कक्षा 4 के बच्चों ने पहले से ही अपनी कक्षा 4 की हिन्दी की किताब के पाठ 5 'मेरा एक सवाल' से नाटक तैयार कर रखा था।

दरअसल बच्चों ने स्वयं ही समूह बनाए और किसको क्या बनना है, यह भी बच्चों ने स्वयं तय किया। जिस दिन गतिविधि होनी थी उस दिन कक्षा में प्रत्येक समूह नाटक प्रस्तुत करने से पहले सामने खड़े होकर, जिस किताब से नाटक तैयार किया था, उस किताब को सभी को दिखाता था और नाम भी बताता जाता था। इस दौरान बच्चों ने बहुत ही आनन्द लिया। यह गतिविधि अलग-अलग दिन दोनों कक्षाओं में कराई गई। शुरुआत में दो-तीन समूह नाटक प्रस्तुत करने आए। इन बच्चों को देखने के बाद दूसरे बच्चों की भी झिझक टूटी और कई अन्य समूह आए जिन्होंने उसी समय किताब पढ़कर 15 से 20 मिनट में नाटक तैयार कर प्रस्तुत किया। बच्चों को यह सब बहुत अच्छा लगा। हम प्रत्येक कक्षा में हर बच्चे की समान रूप से गतिविधि में भागीदारी करवाते थे ताकि कोई भी बच्चा न छूटे। हालाँकि इस गतिविधि में दोनों कक्षाओं के सभी बच्चों ने भाग नहीं लिया, लेकिन हमने सोचा कि इसके बाद हम पुनः बचे हुए बच्चों को इसमें शामिल करेंगे। पर तभी 16 मार्च से कोविड-19 के कारण लॉकडाउन होने से स्कूल बन्द हो गए।

हमारी योजना थी कि मार्च में बच्चों के सामूहिक पठन-पाठन के लिए वहीं के पुस्तकालय की किताबों से एक पुस्तक मेला आयोजित करेंगे। इसमें हम किताबों को प्रदर्शित करेंगे। सारे बच्चे अपनी इच्छानुसार किताबें पढ़ेंगे। इसमें हम बरामदे को पोस्टर, कोटेशन, अब तक कराई गई गतिविधियों के चार्ट पेपर को लगाने से लेकर अन्य स्कूल के बच्चों एवं शिक्षकों को भी आमंत्रण देने की भी तैयारी कर ही रहे थे कि तभी 16 मार्च से स्कूल बन्द हो गए।

बदलाव : इन 6 महीनों में बच्चों और शिक्षकों के साथ काम करते हुए मैंने देखा कि बच्चे गतिविधियों के दौरान दिलचस्पी लेते थे और किताबों को अपनी रुचि के अनुसार पढ़ते थे। शुरुआत से लेकर अन्त तक किसी भी गतिविधि के दौरान हम सभी बच्चों को 15 से 20 मिनट का समय किताब पढ़ने के लिए देते ही थे और छात्र व् छात्राएँ दोनों ही समान रूप से किताबें पढ़ते थे। यहाँ दोनों शिक्षिकाएँ, ज्योति सोनी और संगीता साहू, पुस्तकालय की गतिविधि को पूरी तरह मन लगाकर करती थीं। प्रत्येक गतिविधि के बाद मैं शिक्षकों से बात करती थी कि वे इसी तरह भाषा, गणित, विज्ञान आदि विषयों को पुस्तकालय की किताबों से सीखने-सिखाने का हिस्सा बना सकते हैं। शिक्षकों का कहना था कि बच्चों का कक्षा में मन नहीं लगता था। तब मैंने शिक्षकों से बात की कि आप लोगों ने भी महसूस किया होगा कि जब भी हम पुस्तकालय की गतिविधियाँ कराते हैं तो बच्चे उन्हें करने के लिए काफ़ी उतावले होते हैं और उस समय बच्चों का कक्षा में मन भी लगता है। ऐसे ही हम सभी विषयों को पुस्तकालय से जोड़कर कराएँगे तो उनका मन लगेगा। इसमें

शिक्षक और बच्चों के बीच संवाद होता है जिसमें बच्चे अपने विचारों को रख पाते हैं।

6 महीनों के बाद मैंने देखा कि पहले एक छोटे-से कक्ष में पुस्तकालय था। मार्च में अब वह कक्षा 4 के बड़े कमरे में स्थानान्तरित हो गया। शिक्षक स्वयं लोहे की चार खुली अलमारी ख़रीदकर लाए और उनमें पुनः उन किताबों को जमाया। जिन गतिविधियों को हमने कराया था उनके नामों की सूची को पुस्तकालय के दरवाज़े पर लगाया गया और पुस्तकालय में पोस्टर व अब तक कराई गई गतिविधियों के विवरण को चार्ट पेपर पर लिखकर लगाया गया।

पुस्तकालय पढ़ने-लिखने और सीखने-सिखाने का स्कूल का अहम हिस्सा है। उसका उपयोग कर शिक्षक स्वयं के और बच्चों के सीखने-सिखाने में इसका बेहतर इस्तेमाल कर सकते हैं, जो इस स्कूल में दिखाई दिया और शिक्षकों ने भी स्वीकारा कि पुस्तकालय का समुचित उपयोग करने से बच्चों में बदलाव आता है। लेकिन शिक्षकों का मानना है कि हम स्कूल के अन्य प्रशासनिक कामों की वजह से यह लगातार नहीं कर पाते हैं।

कुल मिलाकर प्रत्येक स्कूल में किताबें हैं यानी पुस्तकालय हैं। इस स्कूल में शिक्षकों और बच्चों द्वारा विषयवार किताबें खुली अलमारी में रखी गईं। बच्चों द्वारा किताबों के लेन-देन (circulation) की शुरुआत हुई और उन्होंने पुस्तकालय का स्वामित्व लिया अर्थात पुस्तकों का लेना-देना, अगर किताबें फट जाएँ तो उन्हें

दुरुस्त (repair) करना, पुस्तकों को जमाना आदि, और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह कि बच्चे पुस्तकें पढ़ने लगे और पुस्तकालय जाने लगे। पुस्तकालय की किताबों से ही बच्चों से अनेक गतिविधियाँ कराई गईं। गतिविधियों में धीरे-धीरे सभी बच्चे हिस्सा लेने लगे और बच्चों के कई प्रकार के कौशल विकसित हुए और उनके उत्साह एवं आत्मविश्वास में दिनोंदिन बढ़ोत्तरी हुई। प्रत्येक बच्चे में कोई-न-कोई गुण होता है बस उसे पहचानने की ज़रूरत है। अगर इसी तरह सभी स्कूलों के शिक्षक प्राथमिक स्तर से ही पुस्तकालय में बच्चों के साथ थोड़ा प्रयास करें तो बच्चे स्वतः ही उस दिशा में आगे बढ़ने लगते हैं और स्कूल का पुस्तकालय जीवन्त हो जाता है, बस ज़रूरत है इस दिशा में कार्य करने की।

आराधना गुप्ता ने पण्डित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय से विज्ञान और लाइब्रेरी साइंस की पढ़ाई की है एवं कम्प्यूटर में डिप्लोमा और लाइब्रेरी ऑटोमेशन में कोर्स किया है। रायपुर के महाविद्यालय और विश्वविद्यालय में क़रीब 7 वर्ष लाइब्रेरियन के पद पर काम किया है। पिछले साढ़े आठ वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में लाइब्रेरी रिसोर्स पर्सन के रूप में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : aradhana.gupta@azimpremjifoundation.org